साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 48, नवम्बर(प्रथम) , 2018

डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अँग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' का डॉ० अनिल चड्डा द्वारा हिन्दी अनुवाद

लेखक - डॉ० रिक लिंडल
अनुवादक - डॉ० अनिल चड्डा

गतांक से आगे

पाप कैसे प्रकट होता है?

यह सिद्ध करके कि पाप कर्म 'व्यावहारिक रूप से आवश्यक' होते हैं, रिक्की ने अब अपने अंतिम प्रश्न पर ध्यान केन्द्रित करना शुरू कर दिया: वह कौन सी परिस्थियाँ होती है जो एक मनुष्य को पाप कर्म करने की ओर ले जाती है? एक व्यक्ति पुण्य की कगार से इतना नीचे कैसे गिर जाता है?

रिक्की ने अपने मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण में कुछ मनोवैज्ञानिक प्रयोगों के बारे में पढ़ा था जो इसका स्पष्टीकरण दे सकते थे. यह प्रयोग आँख बंद करके आज्ञा का पालन करना और दूसरों के प्रति क्रूरता की जांच करते थे:

> 1961 में, स्टैनले मिल्ग्राम, येल विश्वविद्यालय में एक मनोवैज्ञानिक, ने प्रयोगों का एक क्रम संचालित किया जिनकी रूपरेखा अधिकार की शक्ति को उजागर करना था. कुछ व्यक्तियों को बढ़ती हुई वोल्टेज के क्रमवार बिजली के झटके अपने शिकार व्यक्तियों को, जो दूसरे कमरे में एक कुर्सी से बंधे हुए थे और जिन्हें देखा नहीं जा सकता था लेकिन सुना जा सकता था, देने के लिये भर्ती किया गया. जब व्यक्ति यह सोच रहे थे कि वह शिकार व्यक्तियों को शक्तिशाली झटके दे रहे थे, तो दूसरे कमरे में एक टेप रिकॉर्डर से असहाय रूप से चिल्लाने की आवाजें सुनाई गईं जिसमें एक अभिनेता ने दीवार पर सिर पटका, फिर जब झटका एक निश्चित स्तर से ऊपर चला गया तो एक मनहूस सी खामोशी छा गई. अंत में, व्यक्तियों को तीन 450-वाल्ट के झटके एक के बाद खामोश पड़ चुके शिकार-व्यक्तियों को देने के लिये कहा गया.

मिल्ग्राम के प्रयोगों के पहले समूह में, 65 प्रतिशत प्रतिभागियों ने अंतिम क्रम तक झटके दिये, यद्दपि कई इसे करने में सहज महसूस नहीं कर रहे थे. किसी बिंदु पर, प्रत्येक प्रतिभागी रुका और प्रयोग पर सवाल उठाया. 40 में से केवल एक प्रतिभागी ने लगातार 300-वोल्ट से ऊपर के झटके देने से इंकार किया. बाद के अध्ययन ने दिखाया कि लगभग दो-तिहाई प्रतिभागियों ने प्रयोग करने वाले के आदेश पर वह झटके दिये जो वह सोचते थे कि मृत्यु का कारण बन सकते थे.

स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के एक और मनोवैज्ञानिक प्रोफेसर, फिलिप ज़िम्बर्दो, ने स्टेनफोर्ड जेल प्रयोग में मनुष्यों की क्रूर प्रवृतियों की जांच की. यहाँ, 21 पूर्व-स्नातकों को, जो मनोवैज्ञानिक रूप से स्थिर माने गये थे, एक नकली जेल में पहरेदार और कैदी के रूप में चुना गया. पहरेदारों को वर्दी, नजर आने वाले धूप के चश्मे, और लकड़ी की बेंत दी गईं जो यह दिखाने के लिये था कि वह पहरेदार थे. कैदियों लबादे और मोजों की टोपियाँ दी गई थी जो उन्हें ढंग से पूरे नहीं आते थे, उनको उन्हें दिये गये नम्बरों से बुलाया जाता था, और अपने टखनो के इर्दगिर्द चेन पहने हुए थे. सभी प्रतिभागियों को मालूम था कि वह एक प्रयोग में भाग ले रहे थे.

कैदियों को उनके घरों से "कैद" किया गया था, और नकली जेल में लाया गया, जहाँ पहरेदारों ने अपनी भूमिका को उम्मीद से बहुत ज्यादा हद तक निभाया. पहले दिन से ही, उन्होंने कैदियों को अपनी हैसियत दिखने में आनन्द उठाया और, जब तक प्रयोग समाप्त होता, लगभग उनमें से एक-तिहाई ने स्पष्ट रूप परपीड़क प्रवर्ती दिखाई; अर्थात उन्होंने स्पष्ट रूप से पीड़ा देने में आनंद उठाया और पीड़ा को लेने में आनंदित हुए.[58]

58 चार्ल्स मैथयू. व्हाई ईविल एक्सिस्ट्स (कोर्से गाइडबुक). वर्जिनिया: द ग्रेट कोर्सेज, 2011, पृष्ठ 125. इस अध्याय में कुछ जांच की गई अवधारणायें भी इस दिलचस्प प्रकाशन से ली गई हैं.

क्रमश:.....

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें